कक्षा–5

लिंग वचनानि

जिस शब्द के द्वारा पुरूष जाति का बोध हो उसे पुल्लिंग कहते है।–

अखः	घोड़ा
छात्रः	छात्र
मयूरः	मोर
सर्पः	साप
गणेशः	गणेश भगवान
हंसः	हंस
खगः	चिड़िया
वानर	बंदर

जिस शब्द से स्त्री जाति का बोध हो उसे स्त्रीलिंग **कहते है**–

कन्या	लड़की
माला	माला
छात्रा	एक विद्यार्थी (लड़की)
गङ्गा	गंगा नदी
कोकिला	कोयल
पिपीलिका	चींटी
लेखनी	कलम

जिस शब्द के द्वारा न पुरूष जाति और न स्त्री जाति का बोध उसे नपुंसकलिंग कहते है।

पुस्तकम्	पुस्तक
पुष्पम्	फूल
पत्म	पत्ता
फलम्	फल
भवनम्	घर
कन्दुकम्	गेंद
नयनम्	आँख
मुखर्म्	मुँह

कक्षा–5

जिस शब्द के द्वारा एक प्राणी या एक वस्तु का बोध होता है उसे एक वचन कहते है –जिसमें दो का बोध होता हो– उसे द्विवचन कहते है और जिस शब्द से तीन या उससे अधिक वस्तु या प्राणियों का बोध होता हो उसे बहुवचन कहते है।

क्र0	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
1	बानरः	वानारौ	वानराः
	एक बंदर	दो बंदर	बहुत सारे बंदर
2	शुकः	शुकौ	शुकाः
	एक तोता	दो तोते	बहुत सारे तोता
3	मयूरः	मयूरौ	मयूराः
	एक मोर	दो मोर	बहुत सारे मोर
4	नखर्म्	नखे	नखानि
	एक नख	दो नाखून	बहुत सारे नाखून
5	पुष्पम्	पुष्पे	पुवपापि
	एक फूल	दो फूल	बहुत सारे फूल
6	कमलम्	कमले	कमलानि
	एक कमल	दो कमल	बहुत सारे कमल
7	पुस्तकम्	पुस्तके	पुस्ताकानि
	एक पुस्तक	दो पुस्तक	बहुत सारी पुस्तक

प्रश्न–(1) वचनानुसारं चिनुत–

गजौ, चक्राणि, पर्वताः, कन्याः, जलम्:, शय्या, कमले बानरः, गदे, कन्या

एक वचन– बानरः कन्या जलम् शय्य

द्विवचन– गजौ गदे कमले

बहुवचन– चक्राणि, कन्याः पर्वताः

कक्षा–5

प्रश्न (2) रिक्त स्थान पूरयत–

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
माला	माले	मालाः
वनम्	बने	बनानि
गदा	गदे	गदाः
पुरूषः	पुरूर्षो	पुरूषाः
महिला	महिले	महिलाः

प्रश्न (3) द्विवचन रूपाणि लिखत–

उत्तर (क) शुकः– शुकौ

अश्वः– अश्वौ

सर्पः– सर्पो

नयनम्– नयने

माला– माले

कोकिला– कोकिले

पताका– पताके

वानरः– वानरौ

गदा– गदे

फलम्– फले

प्रश्न (4) बहुवचने रूपाणि लिखत–

उत्तर (क) नखम्–नखानि

(ख) गदा– गदाः

(ग) लता– लताः

(घ) फलम्– फलानि

कक्षा–5

(ड़) शुकः– शुकाः

(च) पुष्पम्– पुष्पाणि

(छ) पर्वतः– पर्वताः

(ज) गजः– गजाः

(झ) कमलम्– कमलानि

(य) पुस्तकम्– पुस्तकानि

प्रश्न (5) रिक्त स्थानानि पूरयत –

(क) जिससे पुरूष जाति का बोध हो पुँल्लिग

(ख) जिससे स्त्री जाति का बोध हो स्त्रीलिंग

(ग) जिससे न पुरूष जाति और न स्त्री जाति का बोध होता है। नंपुसक लिंग

(घ) जिससे एक वस्तु का बोध होता है एकवचन

(ड) जिससे दो वस्तुओं का बोध होता है द्विवचन

(च) जिससे अधिक वस्तुओं का बोध होता है बहुवचन

कक्षा–8 **शब्दरूप**

मुनि (इकारान्त पुल्लिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीय	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पंचमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुन्योंः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्योंः	मुनिषु
संबोधन	हे मुने!	हे मुनी	हे मुनयः

नदी– सरिता (ईकारान्त स्त्रीलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नधौ	नधः
द्वितीय	नदीम्	नधौ	नदीः
तृतीया	नधा	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नधै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पंचमी	नधाः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नधाः	नधोः	नदीनाम्
सप्तमी	नधाम्	नधोः	नदीषु
संबोधन	हे नदी	हे नधौ!	हे नधः

अस धातु (होना)

लट् लकार (वर्त्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरूष	अस्ति	स्तः	सन्ति
मध्यम पुरूष	असि	स्थः	स्थ
उत्तम पुरूष	अस्मि	स्वः	स्मः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरूष	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
मध्यम पुरूष	असीः	आस्तम्	आस्त
उत्तम पुरूष	आसम्	आस्व	आस्य

कक्षा–8

लृट् लकार (भविष्यतः काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरूष	भविष्याति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरूष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविवयथ
उत्तम पुरूष	भविष्यामि	भविवयावः	भविवयामः

लोट् लकार (आज्ञा/प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरूष	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
मध्यम पुरूष	एधि	स्तम्	स्त
उत्तम पुरूष	असानि	असाव	असाण

विधिलिङ् लकार (चाहिए/संभावना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरूष	स्यात्ः	स्यातम्	स्युः
मध्यम पुरूष	स्याः	स्यातम्	स्यात
उत्तम पुरूष	स्याम्	स्याव	स्याम

भू (धातु) होना

लट् लकार (वर्त्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरूष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरूष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरूष	भवामि	भवावः	भवामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरूष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरूष	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरूष	अभवम्	अभवाव	अभवाम्

लृट् लकार (भविवयत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरूष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरूष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरूष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

कक्षा–8

लोट् लकार (आज्ञा/प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरूष	भवतु	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरूष	भव	भवतम्	भवत
उत्तम पुरूष	भवानि	भवाव	भवाम

विधि लिङ् लकार (चाहिए/संभावना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरूष	भवेत	भवेताम्	भवेयु
मध्यम पुरूष	भवेः	भवेतम्	भवेत
उत्तम पुरूष	भवेयम्	भवेव	भवेम

सन्धिः

दो या दो से अधिक वर्णे के पास–पास आने पर यदि उनमें कोई परिवर्त्तन होता है तो उसे सन्धि कहते है।

संधि तीन प्रकार के होते है।

(1) स्वर सन्धिः
(2) व्यञ्जन सन्धिः
(3) विसर्ग सन्धिः

1 स्वर सन्धिः– जब स्वर के साथ स्वर का मेल हो तो उसे स्वर सन्धि कहते है।
स्वर सन्धि के आठ भेद होते है।

(1) दीर्घ सन्धिः
(2) गुण सन्धिः
(3) वृद्धि सन्धिः
(4) यण् सन्धिः
(5) अयादि सन्धिः
(6) पूर्वरूप सन्धिः
(7) पररूप सन्धिः
(6) प्रकृति भाव

कक्षा–8

1. दीर्घ सन्धिः– यदि पूर्व पद का अंतिम स्वर अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ हो तथा उत्तर पद का पहला स्वर भी उसी जाति का हो तो दोनो के स्थान पर दीर्घ है।

(1) सूर्य+अस्तः– सूर्यास्तः
अ + अ – आ

(2) हिम + आतयः – हिमालयः
अ + अ – आ

(3) इ + इ – ई
हरि + इच्छा – हरीच्छा

(4) मुनि + ईश – मुनीशः
इ + इ – ई

हिन्दी **लिंग**

कक्षा–2

निम्नलिखित वाक्यो को लिंग के आधार पर बदलिए–

(1) पिता जी बाजार से सामान ला रहे है।
माता जी बाजार से समान ला रही है।

(2) दर्जी कपड़ा सिलाई कर रहा है।
दर्जिन कपड़ा सिलाई कर रही है

(3) धोबी कपड़ा धो रहा है।
धोबिन कपड़ा धो रही है।

(4) दादा जी टहल रहें है।
दादी जी टहल रही है।

(5) माली माला बना रहा है।
मालिन माला बना रही है।

(6) घोड़ा दौड़ रहा है।
घोड़ी दौड़ रही है।

(7) मामी रोटी बना रही है।
मामा रोटी खा रहें है।

(8) पुरूष टहल रहा है।
महिला टहल रही है।

(9) चूहा कपड़े काट रहा है।
चुहिया कपड़े काट रही है।

(10) माली माला बना रहा है।
मालिन माला बना रही है।

(11) लड़का खेल रहा है।
लड़की खेल रही है।

(12) बूढ़ा बगीचे में टहल रहा है।
बुढ़िया बगीचे में टहल रही है।

(13) लड़का खेल रहा है।
लड़की खेल रहा है।

(14) रोहन स्कूल जा रहा है।
रोहिनी स्कूल जा रही है।

(15) भाई बाजार जा रहा है।
बहन बाजार जा रही है।

कक्षा–6

प्रथमा विभक्तिः

"कर्ता" कारकम्

प्रथम विभक्ति–अर्थः ने–यः क्रियां करोति सः कर्ता भवति। इसको तीनो वचनों में दिखाया गया है–

पुल्लिंग	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	बालकः पठति	बालकौ–पठतः	बालकाः पठन्ति
	मुनिः यजति	मुनी यजतः	मुनयः यजन्ति
	राजा हसाते	राजानौ संवदतः	राजानः संवादन्ति

स्त्रीलिंड्गम

बालिका कीडाते बालिका क्रीडतः बालिकाः क्रीडन्ति

(नपुंसकलिड्गम)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
करण्डके फलम अस्ति	करण्डके फले स्तः	करण्डके फलानि सन्ति

इस पाठ से एक कथा भी है जिसमें चिड़ा चिड़ियां एक वृक्ष पर अपने घोंसले में रहते है। उसमें दो अंडे थे पत्ते पर एक मक्खी है। डाल पर एक कठफोड़वा है तलाब के किनाने मेंढ़क है। एक मतवाला हाथी आता है। घोंसले में अंडे रखें है। वह अंडे गिरा देता है। अंडा गिर कर टूट जाता है। चिड़ा और चिड़ियां दुखी होकर रोते है कठफोड़वा मेढ़क मक्खी सभी चिड़ियां को मदद करके हाथी से बदला लेते है। और उसको सबक सिखाते है। ठीक ही कहा गया है एकतायाम् शक्ति अस्ति। एकता में शक्ति है।

अभ्यास–

प्रश्न– (क) शाखायाम्– टहनी पर
(ख) श्रावयतु– सुनो
(ग) चटका–दम्पति– चिड़ा पति–पत्नी
(घ) काष्ठकूटः– कठफोड़वा
(ड़) भूमौ – भूमिपर

कक्षा–6

प्रश्न–(1) उचित पद चित्ता रिक्त स्थान पूर्ति कुरूत–

(क) बालका: पठान्ति

(ख) कारण्डके फलेस्तः।

(ग) फलानि सन्ति ।

(घ) बालिका क्रीडति ।

(ड़) नीडे द्वे अण्डे स्तः ।

(च) तडागतरे मण्डूकः अस्ति

(छ) वृक्षे चटकदम्पती वसतः स्भ ।

(ज) तत् एक मतः गजः आगच्छत् ।

(झ) वीणारवायाः सडगीत श्रृत्वा गजः ।

(ञ) एक तायाम् शक्ति अस्ति।

प्रश्न–2 निम्नलिखित–हिन्दी शब्देभ्यः संस्कृत पदानि लिख्यन्ताम्

(क) आप पु0– भवान्

(ख) दो राजा – राजानौ

(ग) बहुत से मुनि (मुनयः)

(घ) बहुत सी नदियां–नघः

(च) बहुत से फल – फलानि

(छ) कान के पास– कर्णस्य समीपे

(ज) प्यासा –पिपासितः

(झ) खोजने के लिए – अन्वेवटूम्

(ञ) गिरकर – पतित्वा

प्रश्न–3 निम्नलिखित वाक्यानि संशोधन पूर्वक लिख्यन्ताम्–

(क) करण्डे फल सन्ति।
करण्डके फलानि सन्ति।

(ख) बालिकाः कीडति।
बालिकाः कीडन्ति।

(ग) नीडे द्वे अण्डानि स्तः।
नीडे द्वे अण्डे स्तः।

(घ) गजः अन्धः अभवन्।
गजः अन्धः अभवत।

(ड़) एकतायाम् शक्ति अस्ति।
एकतायाम् शक्ति अस्ति।

कक्षा–6

प्रश्न–4 निम्नलिखित–प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखन्ताम्

(क) के पठान्ति?
बालकाः पठान्ति।

(ख) फले कुत्र स्त?
करण्डके फले स्तः।

(ग) काः क्रीडन्ति?
बालिकाः क्रीडन्ति।

(घ) चित्रे काष्ठकूटः कुत्र अस्ति?
शाखायाम् काष्ठकूटः अस्ति।

(ड़) कः वृक्षस्य शाखाम् अत्रोटयत्?
गजः वृक्षस्य शाखाम् अत्रोटयत।

(च) गजः किम् अन्वेष्टुम् अधावत्?
गजः जलम् अन्वेष्टुम् अधावत्।

(छ) गजः कुत्र पतित्वा अमरत्?
गजः गर्त पतित्वा अमरत्।

पाठ–4

सर्वनाम – शब्दाः

संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते है जैसे–"राम" एक छात्र है। यहाँ राम एक संज्ञा है। वह विद्यालय जाता हैं यहाँ वह शब्द संज्ञा अर्थात् राम के स्थान पर प्रयुक्त हुआ हैं अतः वह शब्द सर्वनाम है।

(क) उत्तम पुरूष– वक्ता को उत्तम प्ररूष कहते है। यथा– (1) अहम् (2) आवाम् (3) वयम्
उत्तम पुरूष का प्रयोग तीनो लिंगों में एक समान होता है।
अहं पठामि
आवां गच्छावः
वयं क्रीडामः

(ख) मध्यम पुरूष–श्रोता अर्थात् वक्ता जिसे अपनी बात सुनाता है, वह मध्यम पुरूष कहलाता है। यथा–त्वम् युवाम्, यूयम् तीनो लिंगों में मध्यम पुरूष के रूप एक समान होते हैं यथा–

त्वं दुग्धं पिवसि
युवा दुग्धं पिबथः
यूयं दुग्ध पिबथ

(ग) प्रथम पुरूष – जिसके विषय में वक्ता बात करता है, वह प्रथम पुरूष कहलाता है। अस्मद्–युष्मद को छोड़कर सभी प्रथम पुरूष कहलाता है।

दूर स्थित वस्तु के लिए तद तथा निकट स्थित वस्तु के लिए एतद् का प्रयोग होता है। दोनो शब्दों के तीनों लिंगों में भिन्न –भिन्न रूप होते है।

एषः बाल
एतौ बालौ
एते बालाः
स्त्रीलिंग
सा अजा
ते अजे
ताः अजाः

कक्षा–6

अस्मद् मैं , हम (तीनो लिंगो में समान)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्	आवाम्	अस्मान्
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	महम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्
पंचमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम	अवयोः	अस्माकम्
सप्तमी	मयि	अवयोः	अस्मासु

युष्मद्– तू तुम तीनो लिंगों में समान

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्
पंचमी	त्वम्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव	युवयोः	युष्माकम्
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्यासु